

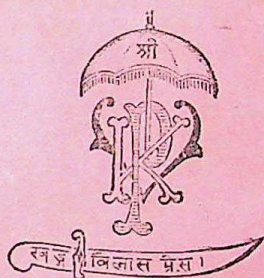
All Rights Reserved.

A
SHORT LIFE OF
EDWARD VII.

BY
GOKARNA SINHA.

महाराजाधिराज भारतेश्वर
श्रीयुक्त सप्तम एडवर्ड

की
सचित्र संक्षिप्त जीवनी
श्रीगोकर्ण सिंह लिखित.



पटना—“खड्गविलास” प्रेस बांकीपुर.
बाबू चण्डीप्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित और प्रकाशित.

१८११.

3rd Edition]

[Price 6 Annas.

विषय सूची ।

नम्बर	नाम	पृष्ठाङ्क
१—जन्म	...	५
२—बाल-अवस्था	...	१०
३—विद्या और बहुज्ञता	...	१५
४—पितृवियोग	...	२५
५—विवाह और सन्तान	...	२७
६—रोग और दुर्घटना	...	३५
७—शोक	...	४०
८—भारतभ्रमण	...	४२
९—स्वदेशहितैषिता के अनेक कार्य	...	४७
१०—सद्गुणावली	...	५५
११—मातृवियोग	...	५८
१२—राजतिलक	...	६१
१३—दिल्लीदरबार	...	६५

म हा रा जा धि रा ज श्री मा न स म म ए ड व ड

की

सचित्र-संक्षिप्त जीवनी ।

जन्म ।

सीता, सावित्री, दमयन्ती इत्यादि उदाहरणीय स्त्रियों के सद्गुण के प्रभाव से भारतवर्ष एक समय में बहुतही गौरवसम्पन्न था । इङ्गलैंड में भी जन्म ग्रहण कर एक स्त्री ऐसी हुई हैं जिन्होंने न केवल इंगलैंड में बरन यूरोप, एशिया, अफ्रिका, अमेरिका आदि के प्रायः सभी स्थानों में अपने अशेष सद्गुणरूपी किरणों को फैलाया है । पाठकगण, इतने से नहीं समझे हों तो जान लें कि वह हम लोगों की महारानी विक्टोरिया थीं; जिन्होंने लगातार ६३ वर्ष राज्य कर १६०१ ई० की २२ वीं जनवरी मंगल वार को सन्ध्या

समय में साढ़े छः बजे इस असार संसार को छोड़ परलोक गमन किया। अब उन के सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्र “ प्रिंस आफ वेल्स ” इङ्ग्लैण्ड के राजनियमानुसार माता की गद्दी पर विराजमान हैं। महारानी के इच्छानुसार नये सम्राट ने ‘ सप्तम एडवर्ड ’ ऐसा नाम ग्रहण किया है।

महारानी जब अपने स्वामी के साथ लंडन नगर के बकिङ्गहमराजमन्दिर में रहती थी, उसी समय इन नये सम्राट का जन्म हुआ। सन् १८४१ ई० की नवीं नवम्बर मङ्गलवार को दस बज के ४८ मिनट पर ये उत्पन्न हुए। प्रसव के पहिले महारानी बड़ी पीड़िता थीं, जिस से उन के स्वामी “ प्रिंस अलबर्ट ” बहुत डर गये थे। केण्टरबरी के आर्च-बिशप, प्रधानमन्त्री और ऊंचे २ पदवाले राजकर्मचारीगण प्रसव के पूर्व ही राजमन्दिर में इकठे हुए थे। नये उत्पन्न राजकुमार को गोद में लिये धाई दूसरे कमरे में इकठे राजकर्मचारियों के पास आई। राजकर्मचारियों ने ब्रिटिश सिंहासन के भावी अधिकारी का जन्मसंवाद लिख अपना २ हस्ताक्षर किया।

नये राजकुमार के लिये जब धाई की आवश्यकता हुई तो उस स्थान के लिये कई एक योग्य स्त्रियों ने निवेदन

किया पर इन के घर की पुरानी दासी ब्रुक इस पद पर नियुक्त हो कर नये राजकुमार का लालन पालन करने लगी। इस काम में उस स्त्री ने १००० पाउण्ड वा १५००० रुपया पारितोषिक पाया।

नये राजकुमार जब दो दिन के हुए तब लार्ड मेयर ने अपने कर्मचारियों के साथ इन को प्रणाम किया। इस दिन बहुत से बंधुए (कैदी) बन्दीगृह से छोड़ दिये गये और बन्दीगृह में रह कर जिस २ ने कोई अपराध नहीं किया था उन का भी शेष कारागारवास बन्द कर दिया गया अर्थात् उन को भी छुटकारा मिला। अनेक दीन, दरिद्र कपड़े रुपये और आहार दान से संतुष्ट किये गये।

नये राजकुमार ड्यूक आफ़ सेक्सनि, ड्यूक आफ़ कार्नवाल, अर्ल आफ़ क्यारिक, वेरन रेनफ़ू, लार्ड आफ़ आइल्स, और ग्रेण्डस्टूअर्ड आफ़ स्काटलैण्ड, इत्यादि उपाधियों से सहित ही भूषित हो चुके थे। जब ये एक महिने के हुए तब इन ने प्रिंस आफ़ वेल्स और अर्ल आफ़ चेस्टर की उपाधि पाई। प्रिंस आफ़ वेल्स की उपाधि पाने के समय इन की कमर में कमरबंद और तलवार, माथे पर स्वर्णमुकुट,

अंगुलियों में मुंदरियां और हाथ में स्वर्णराजदण्ड शोभित थे ।

कुछ दिन बाद नामकरणोत्सव का भारी समारोह होने लगा । सन् १८४२ की २५ वीं जनवरी मंगल को विण्डसर के सेण्ट जार्ज चैपेल में इस महोत्सव का कार्य सम्पादित हुआ ।

इस उत्सव में भजनालय (गिर्जाघर) और राजपथ भली भांति सजा गया । केण्टरवरी लंडन, यार्क इत्यादि स्थानों के प्रधान २ पादरी इकट्ठे हुए । प्रूशिया के नरेश केम्रिज के द्यूक और डचेज़ बुलाये गये । वर्तमान प्रथा के अनुसार प्रूशिया के नरेश नये राजकुमार के धर्मपिता हुए । बहुमूल्य कपड़ों और गहनों से भूषित राजकुमार को केण्टरवरी के प्रधान बिशप के हाथ में प्रदान करने के अनन्तर उन ने तथा अन्यान्य मुख्य बिशपों ने उन का नाम “एलबर्ट एडवर्ड” रक्खा । पिता और नाना का नाम मिला रहे इस लिये “एलबर्ट एडवर्ड” इस प्रकार का नाम रक्खा गया । राजकुमार जार्डन नदी के जल से नहलाये गये । इसी उत्सव के संबंध में सेण्ट जार्ज हाल में एक बड़ा भारी भोज हुआ ।

इसी उत्सव में एक बड़ा भारी रोड बनाया गया । २००००० पाउण्ड अर्थात् ३०००००० रुपया इस महोत्सव में व्यय हुआ । इतने अधिक व्यय से कैसी शोभा हुई होगी और कैसी धूमधाम हुई होगी सो पाठकगण सहज ही में अनुमान कर सकते हैं ।

विण्डसरराजमन्दिर में अब तक इस उत्सव का चित्र विद्यमान है ।

युवराज जब एक महीने २५ दिन के हुए तब सर्वसाधारण पुरुषों ने पहिले इन को देखा । महारानी के मन्दिर के एक झरोखे से राजकुमार देखाये गये । उस समय दर्शकों और सैनिकों की आनन्दध्वनि से राजप्रासाद गूँज उठा ।

अगस्त महीने में एक कप्तान ने महारानी को २७ इंच ऊँचा एक छोटा घोड़ा भेंट किया जो जावाटापू से लाया गया था । वह घोड़ा पांच वर्ष का था पर तब भी एक हाथ से उठाया जा सकता था । महारानी ने इस छोटे घोड़े को युवराज को दिया । युवराज को माता पिता आदर से “बार्टी” कह के पुकारते थे ।

बाल-अवस्था ।

युवराज जब लगभग ढाई वर्ष के हुए तो रशिया के महाराज निकोलस के आदर के लिये एक सेनाओं के मिलने की सभा हुई । युवराज उसे देखने गये इसी समय से युवराज के पिता इन का ज्ञान बढ़ाने के लिये इन्हें पशु-शाला, जहाज, घोड़े के नाच इत्यादि दिखाने ले जाया करते थे । युवराज के पिता ने पुत्र का प्रेमानुराग, ज्ञानानुराग और धर्मानुराग समभाव से बढ़ाने में कुछ भी त्रुटि न की ।

जब ये तीन वर्ष के हुए तो समुद्र के नीले पानी, तरङ्ग-माला और सूर्य के उदय वा अस्त को देख बड़े प्रसन्न होते थे ।

सन् १८४६ ई० में तीन पहाड़ी बौने बाकिज़हम राजम-न्दिर में आये । उन्हें देख युवराज इतना प्रसन्न हुए कि इन ने अपनी प्रिय सोने की माला उन्हें दे दी । वे सब इस गहने को लेने में सकुचे पर महारानी विक्टोरिया उसी समय वहां आई और उन को उस गहने के लेने की आज्ञा दी । और उसी समय महारानी ने कहा कि मेरी यही इच्छा है कि मेरा बेटा ऐसे ही नित्य दया किया करे । तब बौनों ने निःस-

झोच हो उस गहने को ग्रहण किया। प्रायः देखा जाता है कि लड़के अपनी प्रियवस्तु दूसरे को नहीं देना चाहते, पर युवराज का हृदय वास्तव में दयापूर्ण और स्वार्थशून्य है; इसी से आप ने प्रिय गहने को देने में कुछ भी न विचारा। युवराज की निःस्वार्थ दानशीलता का यह एक बड़ा भारी दृष्टान्त है।

युवराज ने माता पिता के सहित आसबर्न राजमन्दिर से जर्सी जाते समय जहाज़ के मल्लाह का कपड़ा पहिना था। जहाज के मल्लाह और कर्मचारीगण यह देख बड़े प्रसन्न हुए।

इस वर्ष बर्नार्ड नाम का एक पुरुष युवराज की मूर्ति बनाने को नियुक्त हुआ। बाल-बुद्धि सुलभ चाञ्चल्य से युवराज ने उस के ऊपर कीचड़ डाल दिया। महारानी ने इस बात को सुन इन का अनादर किया और कहा कि बर्नार्ड से क्षमा मांगो। बहुत लड़के ऐसे होते हैं जो अपने अपराध को जान के भी एकाएक क्षमा नहीं मांगते परन्तु युवराज माता की आज्ञा पालन के लिये अतिशय आनन्द के साथ अपना हाथ उठा के बर्नार्ड को पुकार के बोले “बर्नार्ड! मैंने अन्याय किया है, क्षमा करो और मेरा हाथ दबाओ।

माता जी ने मुझे एक छोटा गदहा कहा है” । यह घटना बताती है कि युवराज का हृदय साधारण लड़कों से कितना ऊंचा था । माता की आज्ञा पालन में वे कैसे तत्पर थे सो भी इस से भली भांति जाना जाता है ।

युवराज जब मिलफोर्डहावेन में आसबोर्न जहाज़ पर जाते थे तब एक वेल्सनिवासी इन के निकट आया । उस को युवराज से हाथ मिलाने की बड़ी इच्छा हुई । पर लोगों ने कहा, क्या युवराज एक साधारण वेल्सवासी से हाथ मिलावेंगे ? पहिले युवराज में आत्मगौरव नहीं था, परन्तु सरलता पूर्णरूप से थी; इस लिये इन ने हंसते २ उस वेल्स-वासी से हाथ मिलाया उस समय चारो ओर साधुवाद की धुनि पूर्ण हो गई ।

सन् १८४७ के अगस्त महीने में युवराज अपने माता पिता के साथ “विक्टोरिया ऐण्ड अलबर्ट” नामक जहाज़ में चढ़ सिलीद्वीप देखने गये । इस यात्रा में जब ये रथ्स में पहुँचे तो वहाँ के वासी छोटे राजकुमार को देख बड़े प्रसन्न हो के जय जय करने लगे । युवराज ने वहाँ रथ्स के द्यूक की उपाधि पाई ।

सन् १८४८ की पांचवीं सितम्बर को युवराज अपने

माता पिता के साथ स्काटलैण्ड गये । इस यात्रा में इन ने कुछ दिन के लिये ब्यालमोरल के किले में वास किया । १८४६ ई० के अगस्त में वे पिता माता के साथ आयर्लैण्ड गये । और वहां आप ने अर्लआफ़ डबलिन की उपाधि पाई । महारानी विक्टोरिया ३० वीं अक्टूबर को लण्डन से कोल-एक्सचेञ्ज उठा देना चाहती थीं पर गोटी निकल जाने से इस कार्य को स्वयं न कर सकीं । तब उन ने इस कार्य का भार अपने पति को सौंपा । जब प्रिन्स अल्बर्ट इस को करने गये तो युवराज को भी अपने साथ लेते गये । युवराज इसी काम में पहले पहल सर्वसाधारण के उपकार में गये थे ।

युवराज ने आठवें वर्ष में पढ़ना आरंभ किया । रेवरेण्ड डेनरी मिलट्रेडवार्च इन के शिक्षक नियुक्त हुए ।

सन् १८५१ को पहली मई को युवराज के पिता ने हाइडपार्क में एक बड़ी भारी प्रदर्शनी की । नाना दिशाओं और देशों से भांति २ की वस्तु मंगा २ कर प्रदर्शनी की शोभा बढ़ाई गई ऐसी प्रदर्शनी पहले कभी कहीं नहीं हुई थी । प्रत्येक पुरुषों के मुंह से इस प्रदर्शनी की चर्चा सुनी जाती है । इंग्लैण्ड के लोग इस प्रदर्शनी को अभी तक स्मरण

किया करते हैं। वास्तव में यह प्रिन्स अलबर्ट की अक्षय कीर्ति है। इस उद्देश्य के पूरे होने में बहुत विघ्न सहने पड़े थे। महारानी विक्टोरिया के अभिषेक के उत्सव से भी इस प्रदर्शनी में अधिक भीड़ हुई थी। युवराज अपनी माता का हाथ पकड़ के इस प्रदर्शनी में आये थे।

इस वर्ष वार्च साहब के स्थान में फ्रेडरिक गिव्स साहब युवराज के शिक्षक नियुक्त हुए। इसी समय युवराज ने घुड़सवारी तथा कुश्ती इत्यादि व्यायामों में बड़ी प्रवीणता प्राप्त की। और २ खेल कूद भी ये भली भांति जान गये थे पर घोड़े पर चढ़ने की इन्हें विशेष रुचि थी।

राजोचित उच्चपद की गौरवरक्षा के लिये युवराज को साधारण लड़कों के संग खेलने वा मिलने की आज्ञा न थी पर तौभी संयोग से यदि साधारण बालकों को इन से भेंट हो जाती तो ये प्रेम पूर्वक मिलते थे। बालकों को फल आदि खाने की वस्तु दे के ये बड़े प्रसन्न होते थे। ये सब गुण साधारण बालकों में बहुत ही कम होते हैं।

विद्या और बहुज्ञता ।

सन् १८५३ में युवराज ने शीतला से बहुत कष्ट पाया । निरुज होने पर वे विण्डसर राजमन्दिर में आ के रहे । और 'चवहाम' नाम की गाड़ी पर चढ़ प्रतिदिन जा के घुड़सवार सेना का युद्ध कौशल देखने लगे ।

अगस्त महीने के अन्त में महारानी विक्टोरिया ने डबलिन नगर में जा कर शिन्पप्रदर्शनी खोली । उस समय युवराज भी अपनी माता के साथ थे ।

दूसरे वर्ष इंग्लैण्ड और रूसिया से युद्ध प्रारंभ हुआ । उस समय पार्लियामेण्ट महासभा के सभ्यों ने बकिङ्गहम राजभवन में इकट्ठे हो के महारानी विक्टोरिया को एक अभिनन्दन पत्र दिया । उसी दिन (३ अप्रैल) पहले पहल युवराज अपनी माता के साथ सिंहासन पर बैठे तब से वे अपनी माता के साथ साधारण कामों में दत्तचित्त होने लगे । महारानी ने जिस समय स्फटिक राजप्रासाद बनवाया और क्रीमिया से लौटे हुए घायल सैनिक पुरुषों को पदक दिया, उस समय भी युवराज अपनी माता ही के साथ थे । पाठकों को यह भी जान लेना चाहिये कि युवराज केवल ऐसे ही

कामों में अपना दिन नहीं बिताते थे वरन पढ़ने लिखने में भी पूरे यत्नवान थे । कभी आलस में समय न गवाँते थे ।

सन् १८५७ में महारानी की फूआ डचेस् आफ़ ग्लोस्टर मर गई । उन के गाढ़े जाने के समय युवराज उपस्थित थे । इस के पहले इन ने कभी किसी को गाड़ते नहीं देखा था । इस समय महारानी ने हाइडपार्क में विक्टोरिया ग्रास की उपाधि बांटी और वहां से वे मैश्वेष्टर की प्रदर्शनी देखने गईं । युवराज अपनी माता के साथ रह के उन को बहुत सहायता देते थे । इन घटनाओं के बाद जेनरलग्रे, कर्नल पन्सन्वि, शिक्तक गिब्स, दूसरे शिक्तक रेवरेण्ड तारदार और डाक्टर आर्मस्ट्राङ्ग इत्यादि के साथ युवराज ने जर्मन और स्विटज़रलैण्ड देखने के लिये यात्रा की । अक्टूबर महीने में इङ्गलैण्ड लौट के ये अपने पाठ पर दत्तचित्त हुए इस समय अध्यापक फ़ण्डे इन को विज्ञानशास्त्र में शिक्षा देते थे ।

सन् १८५८ की २५ वीं जनवरी को जर्मन महाराज स युवराज की बड़ी बहिन का व्याह हुआ और उसी उत्सव में 'बाल' नामक नाच हुआ । युवराज ने पहले कहीं नाच नहीं देखा था । इसी अवसर इन्होंने पहले पहल यह बाल नाच देखा ।

परीक्षा में उत्तीर्ण हो के पहली अप्रेल को विंगडसर के रायल चैपल में केण्टवरी के प्रधान धर्मयाजक से युवराज ने दीक्षा ली। इस के बाद ये दक्षिण आयर्लैण्ड भ्रमण कर इंग्लैण्ड लौट आये। इस समय पढ़ने में ये ऐसे दत्तचित्त थे कि उन्हें 'हाइटलाज' के बाहर कोई नहीं देखता था। इस समय ये एक बार आसबर्न गये। जून में वे चारवार्ग में गये। बालमोरेल राजप्रासाद में ये अहेर खेलने गये और एक हरिण का शिकार किया। इस के पहले इन्होंने कभी शिकार नहीं किया था।

सतहर्वे वर्ष (की अवस्था) में युवराज एक सेना के कर्नल नियुक्त हुए। इसी समय इन का 'आर्डर आफ़ दि गार्डर' की उपाधि मिली। इसी समय शिक्षक गिब्स को काम से छुट्टी मिली और कर्नल ब्रूस युवराज के अभिभावक नियत हुए। इसी समय स्पेन देश की रानी ने युवराज को "आर्डर आफ़ दि गोल्डेनफ़लीस" नाम उपाधि दी। इस के बाद ये प्रूशिया राज्य में गये और वहां इन ने 'आर्डर आफ़ दि ब्लैक ईगल' की उपाधि पाई।

सन् १८५६ की जनवरी में युवराज इटली गये और वहां से लौटते समय जिब्राल्टर गये।

इसी समय ये स्पेन और पोर्चुगाल में गये । जून महीने में हाइडपार्क में २०००० वालंटियरों (बिना दाम पानेवाली सेना) की सम्मिलनी हुई । महारानी विक्टोरिया एक बिना छतरी की गाड़ी पर चढ़ के यह सम्मिलनी देखने गई थीं । युवराज और इन के पिता ने घोड़े पर चढ़ के उस की शोभा बढ़ाई थी ।

इस वर्ष युवराज एडिनबरा नगर में गये । और वहां ' होलीरूड ' राजप्रासाद में रह के पढ़ने में दत्तचित्त हुए । इटली, जर्मनी और फ्रांस देशवासियों की भाषा, रसायन, कानून और इतिहास इत्यादि के विद्वान अध्यापकों से शिक्षा प्राप्त करते थे । उस समय एडिनबरा में सोलह तीरन्दाज सेना रहती थी । युवराज वहीं युद्धविद्या सीखते थे । इसी प्रकार इन्होंने विशेष परिश्रम कर के विविध विद्या सीखी ।

कुछ दिन विश्राम करने के अनन्तर अक्टूबर में युवराज आक्सफोर्ड विश्व विद्यालय में गये । हारवर्ट फ़िसर साहब उस समय शिक्षक नियत हुए । प्रथम परीक्षा में उत्तीर्ण हो युवराज क्राइष्ट कालेज में गये । वहां विशेष दत्तचित्त हो के इन ने पढ़ने में नाम किया और पुरस्कार पाया । बहुत लड़के परिश्रम कर के पढ़ते तो हैं पर अन्त में स्वास्थ्यभंग हो

जाने से अपने सुख और स्वच्छन्दता से बहुत दिन के लिये बंचित हो जाते हैं । इस का मूल कारण यह है कि वे पढ़ने के लिये प्राण को तो उत्सर्ग कर देते हैं परन्तु स्वास्थ्यरक्षा के लिये जिन २ व्यायामों का प्रयोजन है उन की ओर दृष्टि भी नहीं करते । युवराज पढ़ने में विशेष श्रम करते थे परन्तु स्वास्थ्यरक्षा के लिये आवश्यक व्यायाम की भी उपेक्षा नहीं करते थे । ये क्रिकेट खेलना और नाव खेना आदि काम भी किया करते थे ।

कहते हैं कि एक दिन युवराज के टिनिटी से लौटते समय रास्ते में जोर से पानी बरसने लगा । इसलिये ये पास ही एक बुढ़िया नानवाई की दूकान में ठहर गये । पर जब पानी कुछ न रुका तब इन्होंने उस बुढ़िया से एक छाता मांगा । बुढ़िया ने अपने घर से एक पुराना टूटा छाता ला दिया । “ इस छाते को बहुत शीघ्र लौटा दूंगा ” ऐसा कह के ये दूकान से निकल अपने वासस्थान को गये और एक नौकर से छाता लौटा दिया । उस नौकर ने छाता लौटाते समय बुढ़िया को एक गिन्नी दी और युवराज की कृतज्ञता प्रकाश की । पहले तो युवराज का नाम सुन के और फिर उस नौकर की चमकीली सजावट देख के बुढ़िया विस्मित

हुई और बोली, “ यदि मैं जानती कि वे राजकुमार थे तो ऐसा फटा छाता न दे के अवश्य अपना रेशमी छाता देती ” ।

१८६० ई० की दशवीं जुलाई को युवराज अपना नाम बेरनरेनफ्रू रख के “ हीरो ” नामक जहाज़ पर चढ़ अमेरिका गये । जहां २ युवराज जाते थे हर एक स्थान में इन का आदर और सत्कार होता था । माउण्ट वार्नन नामक स्थान में अमेरिका राज्य की स्वाधीनता स्थापक वाशिङ्गटन जहां गाढ़े गये थे वहां युवराज ने प्रीति दिखाने के लिये एक बादाम का पेड़ अपने हाथ से लगाया । पन्द्रहवीं नवम्बर को ये अपने देश में लौट आये । प्रायः देखा जाता है कि देशभ्रमण के समय लड़के स्वभावतः पाठ में ध्यान नहीं देते पर युवराज ने ऐसा नहीं किया । ज्ञान प्राप्ति के लिये देश-भ्रमण जितना आवश्यक है, उतनाही पढ़ना भी, युवराज ने इन दोनों को भली भांति किया । इसी से आप ने अपने देश में आके आक्सफ़ोर्ड में पढ़ना आरंभ किया और थोड़े ही दिनों में वहां की उपाधि पाई । दूसरे वर्ष ये केम्ब्रिज के ट्रिनिटी कालेज में जा के पहले की नाई अपने पाठ में दत्तचित्त हुए ।

केम्ब्रिज में रहने के समय में कलरसरजेण्ट हेजेलवुड साहब की शिक्षा से युवराज युद्धविद्या में बड़े पारङ्गत हुए । आयर्लैंड के अन्तर्गत कराग छावनी की छत्तीसवीं सेना में इन का नाम लिखा गया । सेप्टेम्बर महीने में ये प्रुशिया देश का युद्धकौशल देखने के लिये जर्मन राज्य में गये । इसी यात्रा में डेनमार्क की राजकन्या अलेक्जेंद्रा से भेंट हुई और जर्मन छोड़ने के पहले ही व्याह होना स्थिर हो गया ।

अक्टूबर महीने में युवराज ने बारिष्टरी पास किया और मिडिलटेम्पल का पुस्तकालय खोला । दूसरे महीने की पहिली तारीख को महारानी विक्टोरिया ने ' आर्डर आफ़ दि स्टार आफ़ इण्डिया ' की उपाधि निकाली और पहले पहल उसे युवराज को दिया । युवराज वहां से लौट के जब केम्ब्रिज में टिके थे तो इन के पिता वहां इन्हें देखने गये । लौटते समय प्रिंस अलबर्ट बीमार हो गये और धीरे २ उन की बीमारी बहुत ही बढ़ गई । युवराज की दूसरी बहिन आलिस ने इन्हें शीघ्र पिता के पास आने के लिये तार दिया । इस भयानक समाचार को पाते ही युवराज पिता के निकट आये । १४ वीं दिसम्बर को १० बज के ५० मिनिट पर इन के पिता की परम शोकदायक मृत्यु हुई ।

१८६२ की छठीं फरवरी को युवराज फिर बेरनरेनफू की उपाधि धारण कर पूर्व देश की यात्रा की। मिसिर राज्य में भ्रमण कर ये पेल्लेस्टाइन गये और जेरुज़लम तीर्थ का दर्शन किया। इस के अनन्तर इन्होंने इब्राहिम का समाधिस्थान देखा। मन्दिररक्षक ने कहा कि बिना मेरा वध किये अब तक कोई राजा भी समाधिमन्दिर का दर्शनाधिकारी नहीं हुआ था, परन्तु आप तो इज़लैण्डेश्वरी के ज्येष्ठ पुत्र हैं; इसलिये हम लोगों को आप के लिये कुछ भी अदेय नहीं है। लौटते समय इन ने रोड्स, स्मर्ना, माल्टा, कन्स्टैंटिनोपल (कुस्तुनतुनिया) इत्यादि स्थानों में भ्रमण किया। पिता के मरने पर इतना शीघ्र युवराज देशभ्रमण के लिये क्यों निकले? कोई २ कहते हैं कि आमोद प्रमोद ही के लिये युवराज यात्रा को गये पर वास्तव में यह बात नहीं है, बरन अपने मृत पिता की आज्ञा पालन करने के लिये ये पेल्लेस्टाइन इत्यादि स्थानों में गये थे।

अपने देश में कुछ दिन रह के युवराज प्रूशिया के राजमन्दिर में गये और काउन प्रिंस तथा प्रिंसेस से भेंट कर इटली को गये।

युवराज ने जिस प्रकार विद्याशिक्षा, बहुज्ञता और अनुभव प्राप्त किया है वैसा बड़े भाग्य से कदाचित् कोई एकाध मनुष्य हो संकता है। पिता माता के गुण से सन्तान भी गुणवान् होता है। सौभाग्यवश युवराज के पुण्य प्रताप से जैसे माता पिता इन्हें मिले वैसे पृथ्वी पर विरले ही को मिलते हैं। संसार में जिन २ विद्याओं का प्रयोजन पड़ता है और राज्यशासन में जिन २ शिक्षाओं की आवश्यकता है, सो सब युवराज को भली भांति दी गई थी। और कशं तक कहें गोसेवा, गोदोहन, दही, खोआ इत्यादि बनाना, पशुपालन, इल जोतना, पेड़ लगाना, पानी सींचना, घर बनाना, काठ छेदना, टेबल, कुर्सी इत्यादि बनाना, इत्यादि इन शिक्षाओं में भी युवराज उपेक्षा नहीं करते थे। प्राणितत्त्व, भूतत्त्व, प्राकृतिकतत्त्व उद्भिदतत्त्व इत्यादि अनेक तत्त्वों को भली भांति जान गये थे। अन्त में यह कहना पाठकगण अत्युक्ति न समझें कि किसी राजकुल में इन युवराज के समान सर्वविद्याविशारद निस्संदेह दूसरा कोई नहीं है।

लण्डन के “ इण्डिपेण्डेण्ट ” नामक समाचार में युवराज के एक पुराने मित्र और सुलेखक एफ़ कानलिफवेयेन

साहब ने आप की विद्याशिक्षा के विषय में जो लिखा है उस से स्पष्ट जान पड़ता है कि इन की शिक्षा में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं हुई। वे कहते हैं कि अंगरेजी, जर्मन और फ्रेंच भाषा में कोई ऐसी उत्तम पुस्तक नहीं है जिस को युवराज ने न पढ़ा हो और ऐसा कोई ग्रन्थ समाचार पत्रों में समा-लोचित नहीं हुआ जिस को इन ने पहले ही से मार्लबरो वा सांड्रिहम में न पढ़ा हो। बहुत से फ्रेंच ग्रंथकर्ता अपनी पुस्तक के प्रकाशित होते ही उस को युवराज के पास भेज देते थे। कोई २ कहते थे कि महारानी के ज्येष्ठ पुत्र बड़े आमोदप्रिय हैं, किन्तु इन की विद्या की अधिकता जान के 'एम् ग्यामबेटा' ने एकबार 'कानलिफ बेयेन साहब' के निकट आश्चर्य प्रकाश किया था। ऐसा भी सुना जाता है कि युवराज के आज्ञानुसार 'बेयेन साहब' ने इन के पास बहुत सी पोथियां भेजीं। उन के विचार से युवराज सरीखे तीक्ष्णबुद्धिवाले और सतशिक्षा पाये हुए सम्राट बहुत कम राजसिंहासन पर बैठे हैं।



पितृवियोग ।

यह पहले लिख चुका हूँ कि युवराज के पिता केम्ब्रिज से लौटते समय रुग्ण हुए और रूग्णावस्था ही में वे ईटन कालेज की अवैतनिकसेना की सम्मिलनी देखने गये । पहली दिसम्बर को उस दुर्बलावस्था में उन ने गिरजा घर में जाके घुटने के बल खड़े हो कर प्रार्थना की । उस के पीछे धीरे २ उन का बल घटने लगा और चारो ओर उन्हें शून्य दिखाने लगा । ज्वर भी बढ़ने लगा । ८ वीं दिसम्बर को लोग उन्हें दूसरी कोठरी में ले गये । उसी कोठरी में चतुर्थ विलियम और चतुर्थ जार्ज भी मरे थे । प्रिन्स की इच्छा से उस कोठरी में एक पियानो बाजा रखा गया । उन की कन्या अलिस ने उसी यंत्र की सहायता से जब स्तोत्र पढ़ा तो उस के सुनने से उन की आंखों में आंसू भर आया । उस अवस्था में भी वे सदा दोनों हाथ जोड़ प्रार्थना किया करते थे । बारहवीं तारीख को ज्वर बहुत बढ़ गया और सांस लेने और फेंकने में कष्ट होने लगा । तेरहवीं तारीख को डाक्टरों ने महारानी से कह दिया कि आप के पति का रोग भयानक हो गया । तब लोग उन्हें दूसरी कोठरी में ले गये ।

वहाँ भी वे सदा झरोखे की ओर देखते, हाथ जोड़े पड़े रहते थे ।

युवराज 'अलिस' नाम बहिन का भेजा हुआ तार पाके तुरत पिता के निकट चले आये पर रुग्ण पिता की सेवा और सुश्रूषा भली भाँति नहीं कर सके अर्थात् इन के आने पर २४ घण्टे भी न बीतने पाये थे कि १८६१ ई० की १४वीं दिसम्बर की रात में दस बज के ५० मिनिट पर विधाता ने इन को पितृहीन कर दिया । इस दुर्घटना से राजपरिवार औ साधारण जनों को अत्यन्त शोक हुआ । उनकी समाधिक्रिया करने के पहले महारानी अपने लड़के बालों समेत दूसरे राजमन्दिर में जा के अपनी सन्तानों की भलाई के लिये विधवा का वेश धारण कर बिना आडम्बर आसबर्न राजमन्दिर में गई । आसबर्न जाते समय 'फ्रगमोर' में जा के उन्होंने ने अपनी और अपने पति की समाधि का स्थान निश्चित किया ।

२३ वीं दिसम्बर को विण्डसर के सेण्ट जार्ज चैपेल में प्रिंस अलबर्ट की समाधिक्रिया की गई । युवराज ने अपने पिता की अन्त्येष्टि क्रिया की । इस समय युवराज और इन के भाई शोक से इतने अधीर थे कि दर्शकगण इन लोगों को देख के शोक से विह्वल हो जाते थे ।

गदगद कण्ठ युवराज ने अपने भाई से दो चार बात कह उन्हें समझाया, पर अन्त में समाधिक्रिया करने पर भाई सहित मुंह पर कपड़ा रख ये भी अधीर हो रोने लगे। वाक्स में धरे मृतदेह को कबर में नीचे धरने के समय युवराज सब के आगे बढ़ के देखने गये और फिर धैर्य त्याग मुंह ढाककर रोने लगे। उस समय लार्ड चेम्बरलेन इन्हें सान्त्वना दे घर ले आये।

विवाह और सन्तान।

१८६३ ई० की ५ वीं फरवरी को पार्लियामेण्ट में युवराज ने पहले पहल आसन ग्रहण किया। १६ वीं को पार्लियामेण्ट से उन को ४०००० पाउण्ड वार्षिक वेतन नियत हुआ। इस के सिवा कार्नवाल की संपत्ति से उन्हें वार्षिक ६०००० पाउण्ड मिलता था। इसी समय राजकुमारी एलेक्जेंड्रा के साथ राजकुमार का विवाह स्थिर हुआ। युवराज के पिता की इस विवाह के देखने की बहुत ही इच्छा थी।

कुछ दिन बाद विवाह की तयारी होने लगी। यह निश्चय हुआ कि राजकुमारी एलेक्जेंड्रा के लण्डन आने के लिये

४०००० पाउण्ड खर्च किया जाय । ४०००० पाउण्ड का ६००००० रुपया हुआ । पाठकगण अनुमान कर सकते हैं कि इतने रुपयों से कैसी भारी सजावट हुई होगी । राज-कुमारी सातवीं मार्च को ग्रेवसेण्ड नामक स्थान में आई, जहां दस हजार से भी अधिक मनुष्य इकट्ठे हुए थे । प्रत्येक गृह फूल और पताकाओं से सज्जित था । रात में लण्डन शहर रोशनी से जगमगा गया । इङ्गलैण्ड, स्काटलैण्ड और वेल्स में उस रात को बहुत आतशबाजियां छुटीं ।

विण्डसर राजप्रासाद के एक कमरे में बैठ महारानी विक्टोरिया अपनी लड़कियों के साथ नई बहू के आने की प्रतीक्षा कर रही थीं और पुत्रबधू के आने पर उन का आदर भाव वैसा ही किया जैसा कि माता अपनी कन्या का करती है ।

दसवीं तारीख को सेण्टजार्जचैपेल में युवराज ने राज-कुमारी का पाणिग्रहण किया । कैण्टरबरी के प्रधान आर्च-बिशप ने इस शुभ महोत्सव का कृत्य करवाया । राजकुमारी जब भूषणों से सज के विवाह की सभा में आई तब दर्शकगण उन के अलौकिक रूप लावण्य देख अत्यन्त विस्मित हो गये । 'इस विवाह के समय में हमारे पिता नहीं हैं' ऐसा स्मरण कर युवराज की सब बहिर्ने छिप के रोने लगीं, उस

से यह दृश्य एक नये ढंग का हो गया। विवाह के अनन्तर वरवधू विण्डसर के किले में गई, महारानी विक्टोरिया ने उन्हें आदर से ग्रहण किया।

इंग्लैण्ड के रीत्यानुसार विवाह के अनन्तर वरवधू ने दूसरे स्थान में जा के कुछ समय बिताया। उसी रीति के अनुसार २८ मार्च तक दम्पति ने आसबर्न, बकिंगहम, विण्डसर और सांड्रिहम राजभवनों में निवास किया। विवाह के उत्सव में युवराज-पत्नी को नाना देश देशान्तर से आई ३० लाख रुपये की भेंट मिली। उन में से केवल लण्डनवासियों ने डेढ़ लाख रुपये का हीरे का हार भेंट में दिया था।

विवाह का हर्ष प्रकाश करने के लिये लण्डन तथा और २ प्रधान नगरों में विशेष उत्सव किया गया। दसवीं तारीख को लण्डन शहर में दीपावली की शोभा हुई। उस को देखने के लिये इतने लोग इकट्ठे हुए कि ६ आदमी लोगों के पांव तले दब के मर गये। इस समाचार को सुन युवराज बहुत दुःखित होके लार्ड मेअर के पास सहानुभूतिसूचक एक पत्र भेजा। युवराज के पाणिग्रहण का चित्र विण्डसर के राज-भवन में अब तक रखा हुआ है। युवराज ने जैसी गुणवती

और रूपवती भार्या पाई, इस संसार में वैसी भार्या बिरलाही कोई पाता है ।

संतान की ओर ध्यान देने से भी युवराज को बड़ा भाग्यवान कहना उचित जान पड़ता है । इन को तीन पुत्र और तीन कन्या थीं । १८६४ ई० की ८ वीं जनवरी को युवराज के प्रथम पुत्र फ्रगमोर राजभवन में उत्पन्न हुए । मार्च महीने के पहिले युवराज-पत्नी के सन्तान होने की सम्भावना न थी, इसी कारण आवश्यकीय वस्तुओं का संग्रह कुछ भी नहीं किया गया था । इङ्गलैण्ड के भावी अधिकारी का जन्म होने पर सर्वसाधारण ने अतिशय आनन्द प्रकाश किया । १० वीं मार्च को बकिङ्गहम राजप्रासाद में नवकुमार के नामकरण का उत्सव किया गया । उन का नाम “अलबर्ट विक्टर क्रिश्चन एडवर्ड” रखा गया । महारानी विक्टोरिया ने इस पौत्र को एक अद्भुत उपहार दिया । वह उपहार नवराजकुमार के दादा प्रिंस अलबर्ट की एक छोटी सी चांदी की मूर्ति थी । उस मूर्ति की बनावट अत्यन्त प्रशंसनीय थी ।

१८६५ ई० की तीसरी जून को युवराज के दूसरे पुत्र ‘जार्जफ्रेडरिक अर्नेस्ट अलबर्ट’ (ह्यूक आफ़ यार्क) जन्मे ।

युवराज के ज्येष्ठ पुत्र अलबर्ट विक्टर की अकाल मृत्यु होने से अब दूसरे ही पुत्र इंगलैण्डीय सिंहासन के भावी अधिकारी हैं ।

१८६७ ई० की २० वीं फरवरी को युवराज की पहली लड़की 'लूइस विक्टोरिया एलेक्जेंड्रा डगमर' का जन्म हुआ । १८६८ ई० की छठीं जुलाई को 'विक्टोरिया एलेक्जेंड्रा अलगा मेरी' नाम की कन्या हुई । दूसरे वर्ष युवराज को और एक कन्या हुई उस का नाम 'माड कार्नेट मेरी विक्टोरिया' रखा गया । १८७१ की छठीं एप्रिल को युवराज की सब से छोटी कन्या का जन्म हुआ, परन्तु उस के दूसरे दिन उन की आयु पूरी हो गई ।

युवराज और राजकुमारी एलेक्जेंड्रा ने २५ वर्ष दम्पति का सुख भोग किया, इस कारण इंगलैण्ड की प्रथा के अनुसार १८८८ ई० की १० वीं मार्च को इन का "रौप्य विवाह" हुआ ।

उस के संबंध में युवराज को अनेक प्रकार की भेंट मिलीं । मार्लबरो राजभवन में एक बड़ा भोज हुआ । उस भोज में राजपरिवार के सभी कोई उपस्थित थे ।

१८८६ ई० की २७ वीं जुलाई को बकिंगहम राजभवन

के गिरजा में युवराज की कन्या 'लुइस' का 'ड्यूक ऑफ़ फाइफ' से विवाह हुआ। युवराज ने स्वयं कन्यादान किया। महारानी विक्टोरिया भी उस समय वहीं थीं। यह कहना अनुचित न होगा कि युवराज को परिवार संबंधी कार्यों में इस विवाह द्वारा बहुत आनन्द प्राप्त हुआ।

१८६१ ई० में युवराज के बड़े पुत्र प्रिंस अलबर्ट विक्टर भारतवर्ष और ब्रह्मा देश में भ्रमण करने आये। जहाँ २ आप गये सब जगह आप का पूर्ण रूप से सत्कार हुआ। भारतवर्षीय राजाओं ने बहुत अधिक व्यय करके उन का बड़ा सत्कार किया। भारतवासियों की राजभक्ति देख कर माता सहित युवराज बहुत प्रसन्न हुए। पर खेद के साथ लिखना पड़ता है कि उस के दूसरे वर्ष उन की अकालमृत्यु हो गई, जिस से राजपरिवार सहित समस्त ब्रिटिशप्रजा को अत्यन्त शोक हुआ। किन्तु कुछ दिन पीछे एक बड़े शुभ महोत्सव के होने से वह शोक जाता रहा और इंग्लैंड में आनंद उमड़ गया। १८६१ ई० की ६ ठीं जुलाई को सेंट जेम्स के गिरजा में युवराज के दूसरे पुत्र जार्ज का शुभ विवाह टेक की राजकुमार 'मे' से हुआ। उस उत्सव में पत्नी सहित डेनमार्क

के राजा, रूस के राजकुमार और अन्यान्य अनेक माननीय महाशयों का शुभागमन हुआ था। निमंत्रित सज्जनों के सम्मान के लिये महारानी विक्टोरिया की आज्ञा से 'रायल इटालियन अपेरा' नाम बंगले में "रोमियो और जुलियट" नाम का नाटक हुआ। राज्य भर में विवाह का उत्सव मनाया गया, तो इंग्लैंड की प्रसन्नता के विषय में क्या पूछना है। यह भी पाठकों से कहना उचित जान पड़ता है कि राजकुमारी "मे" बहुत रूपवती और गुणवती हैं। उन्हीं से युवराज के प्रथम पुत्र का विवाह स्थिर हो गया था। अब वेही भविष्य में हम लोगों की महारानी होंगी।

१८९४ ई० में युवराज को पौत्र हुआ। २३ वीं जून को सांड़िहम में नये कुमार का नामकरण हुआ। "प्रिंस एडवर्ड और्यु यार्क" नाम रखा गया। समय पाकर वेही नये कुमार महाराजाधिराज होंगे। तो उन के नामकरण में कैसा उत्सव हुआ होगा सो पाठकगण अनुमान कर सकते हैं।

१८९६ ई० की २२ वीं जुलाई को युवराज की कन्या "माड" का डेनमार्क के युवराज "चार्ल्स" से विवाह हुआ। वर का शुभागमन जुलाई के प्रथम भाग में हुआ था। विवाह में राजकुमारी को कम से कम तो ६०० पौंड

की वस्तुएं भेंट में मिलीं । उस विवाह में जो 'केक' * बना था सो प्रायः ग्यारह पसेरी वजन में और साढ़े चार फीट उंचाई में था । २० वीं जुलाई को युवराज परिवारवर्ग के साथ वर कन्या सहित "गीसा" का अभिनय देखने के लिये डेली के बंगले में गये; वहां दर्शकों ने बहुत आदर किया । बकिङ्गहम राजभवन का गिरजा विवाह के लिये सज्जित किया गया । विवाह के दिन 'माल' नामक राज-पथ पर बड़ी भीड़ हुई । कैंटरबरी के आर्चबिशप ने विवाह करवाया । बहुमूल्य वस्त्र और भूषणों से शोभित राजपुरुषों से गिरजाघर जगमगा गया । विवाह के पीछे युवराज की गाड़ी पर सवार हो वरबधू कंष्टिटिउशन हिल, पिकाडिली, सेंटजेम्स स्ट्रीट हो कर मार्लबरो राजभवन में आईं । वर-बधू के जाने का मार्ग भली भांति सजा हुआ था । उस पथ पर ऐसी भीड़ हुई कि दर्शकों में कितनी स्त्रियां अचेत होने से दूसरी जगह भेज दी गईं । उसी दिन एक बड़ा भोज हुआ । और सड़कों पर ऐसी रोशनी की गई कि उस को देखने के लिये १२ बजे रात तक लोग चलते रहे । भारत-वर्ष के नगरों में १२ बजे रात तक चलना कोई बात नहीं

* अंडा, मीठा किसमिस आदि से बनी खाने की वस्तु ।

है, पर इंग्लैण्ड में यह अत्यन्त आश्चर्य की बात समझी जाती है ।

उसी वर्ष के दिसम्बर में युवराज के दूसरे पौत्र का जन्म हुआ । “अलबर्ट फ्रेडरिक आरथर जार्ज” नाम रखा गया ।

—०—

रोग और दुर्घटना ।

आठवें वर्ष अर्थात् १८४६ ई० के अक्टूबर महीने में एकबार शिकार की बड़ी तयारी हुई । युवराज भी अपने पिता के साथ वहां गये । कर्नल ग्रे के पीछे जाते समय देखा कि एक पक्षी को बन्दूक की गोली लगी है । उस पक्षी को पकड़ने के लिये जैसे ये वेग से चले कि उसी समय लाट कैनिंग की गोली इन के ऊपर हो कर कर्नल ग्रे के मुख में लगी । ‘युवराज को गोली लगी है’ ऐसा जान कर सब के सब दुःखित और चंचल हो गए । पर ईश्वर की कृपा से वह गोली युवराज को स्पर्श भी नहीं कर सकी ।

उस के अनन्तर १६ वें वर्ष में आप एक भील के किनारे पहाड़ पर चढ़ रहे थे । एकाएक पैर फिसल जाने से

७० हाथ नीचे चले गये । इस दुर्घटना में ईश्वर के परम अनुग्रह से युवराज का प्राण तो बचा, पर बहुत चोट लगी और सम्पूर्ण शरीर रक्त से भर गया ।

१८६० ई० में युवराज अमेरिका गये । वहाँ इन के सम्मान के लिये न्यूयार्क नगर में एक बड़ा नाच हुआ । उस नाच में सहस्रों मनुष्य के बोझ से घर का छत गिर गया, किन्तु ईश्वर की कृपा से किसी के प्राण की आशंका न हुई ।

१८६१ ई० के सेप्टेम्बर में हेउडनबर्ग में युवराज अपनी भावी पत्नी से भेंट करने गये । वहाँ जिस कुर्सी पर आप बैठे थे, उस को छोड़ कर जैसे ही दूसरे आसन पर गये वैसे ही एक भाड़ के गिरने से वह पहली कुर्सी चूर चूर हो गई । ईश्वर की प्रेरणा से यदि युवराज आसन नहीं बदलते तो न मालूम क्या अनर्थ होता ।

१८६५ ई० के जून महीने में अर्थात् प्रिंस जार्ज के जन्म के कुछ दिन पीछे राजप्रासाद में एक बार आग लगी । उस के बुझाने के लिये ऊपर से यत्न किया जा रहा था । संयोगवश युवराज भी उसी छत पर थे । इन के पैर के नीचे का छत भी जल कर गिरने लगा, उपस्थितबुद्धि युवराज चट

एक लोहे की कड़ी पकड़ के लटक गये पीछे दूसरों ने इन्हें उस अवस्था से हटा लिया ।

१८६६ ई० में युवराज के जीवन में शंकाजनक और एक दुर्घटना हुई । बेलजियम की रानी और अश्वशाला के अध्यक्ष के साथ आप घोड़े पर चढ़ के लण्डन के शहरों में घूम रहे थे । एक दूसरा घुड़सवार दूसरी ओर से आ रहा था । उस का घोड़ा ऐसे वेग से आता था कि वह बहुत यत्न कर के भी उस को नहीं रोक सका । बस उस के घोड़े के धके से युवराज का घोड़ा गिर गया । वह दुर्घटना ऐसी शीघ्रता से हुई कि देखनेवालों को आश्चर्य हो गया । ईश्वर की कृपा युवराज पर पूर्ण रूप से विराजती थी, जिस से इन्हें कुछ भी चोट न लगी; वरन तुरत ही आप घोड़े के नीचे से अपने को निकाल कर फिर उसी घोड़े पर चढ़ वहां से चल दिये; कुछ भी न जान पड़ा कि युवराज को चोट लगी है वा इस से ये दुःखी हैं ।

१८६८ ई० में युवराज पत्नी सहित यूरोप और अफ्रिका घूमने गये । पैरिस जाने पर फ्रांस के अधिपति ने इन के आखेट का प्रबंध किया । युवराज घोड़े पर सवार हो कर

वन में जा रहे थे कि एक हरिण ने इन के घोड़े को सींग से ऐसा मारा कि ये भूमि पर गिर गये, किन्तु चोट न लगी ।

१८७१ ई० के नवेम्बर महीने में युवराज मरने से बचे, इस के पहले कभी ऐसा कष्ट नहीं हुआ था, न प्राण की शंका हुई थी । १८५३ ई० में शीतला कर के युवराज पीड़ित हुए थे, किन्तु आरोग्य होने में अधिक दिन नहीं लगे । इस बार ज्वर बिगड़ गया । इस कारण राजपरिवार सहित सर्व-साधारण बहुत व्यग्र हो गये । ८ वीं दिसम्बर को रोग ऐसा बढ़ा कि इन के जीवन में सन्देह होने लगा । महारानी विक्टोरिया और राजपरिवार सांद्भिहम राजभवन में इकट्ठे हुए । महारानी के आज्ञानुसार १० वीं और ११ वीं को हर एक गिरजा में युवराज के निरुज होने के लिये प्रार्थना की गई । १४ वीं तारीख से युवराज का रोग घटने लगा और क्रम से आप अच्छे होने लगे । प्रजावर्ग ने आरोग्य होने के लिये जो उत्कंठा और सहानुभूति दिखाई थी उस के उत्तर में महारानी ने २२ वीं तारीख को एक हृदयग्राही पत्र लिखा था ।

युवराज के आरोग्य होने पर १८७२ ई० की २७ वीं

फर्वरी को बृटिशराज्य भर में उत्सव किया गया। और महारानी के आज्ञानुसार इंग्लैण्ड के सब गिरजाओं में विशेष प्रार्थना की गई और ईश्वर को धन्यवाद दिया गया। जिस समय महारानी दहने हाथ से पुत्र का और बायें हाथ से पुत्रवधू का हाथ धर के सेंटपालगिरजा में गई उस समय १३०० मनुष्य वहां इकट्ठे थे, उन लोगों ने हृदय से प्रसन्न हो कर जयध्वनि की। आरोग्य होने पर चिकित्सक के विचारानुसार वायुपरिवर्तन के लिये युवराज दूसरे स्थान को गये।

१८७२ ई० में युवराज ने पैलेस्टाइन तीर्थ का दर्शन किया। एकवार आप मरुसागर में स्नान करने गये। जल में बैठते ही आप का शरीर शिथिल हो गया, और अचेत हो गये। एक नौकर ने तुरत ऊपर लाकर प्राण बचाया।

१८७४ ई० में युवराज एकवार एक नाव पर चढ़ कर कहीं जा रहे थे। एक दूसरी नाव जो दूसरी ओर से आती थी उस से टकर खा के वह नाव डूब गई, किन्तु ईश्वर की कृपा से आप डूबने से बच गये।

१८६८ ई० के जुलाई महीने में युवराज जगत प्रसिद्ध धनकुबेर रथचाइण्ड के यहां गये। वहां सीढ़ी पर चढ़ते समय पैर

पिछल जाने से घुटने (ठेहुन की चक्की) में बड़ी चोट लगी । बहुत दिनों तक उस चोट से कष्ट सहना पड़ा ।

१६०० ई० में भी युवराज मृत्युमुख से बच गये । बेलजियम की राजधानी ब्रुसेल्स नगर में रेलवे स्टेशन पर 'सिविडो' नामक एक दुष्ट बालक ने आप पर लज्ज कर के बंदूक चलाई, किन्तु ईश्वर की कृपा से उस की गोली युवराज को स्पर्श भी नहीं कर सकी ।

पाठकगण अनुमान कर सकते हैं कि इतनी विपत्तियों से बचना क्या सामान्य भाग्यवान् का काम है !



शोक ।

युवराज का जैसा सरल स्वभाव है उस से आप मनुष्य-मात्र का दुःख वा शोक देख कर वा सुन कर दुःखी और चिन्तित हो जाते हैं । किन्तु तीन चार बार आप को ऐसा शोक हुआ कि जिस से बड़े ही दुःखी और विह्वल हो गये । वे सब दारुण शोक पिता, माता, बंधु और पुत्र वियोग था ।

१८८४ ई० की २८ वीं मार्च को युवराज के भाई 'ड्युक-
ऑफ़ आलबनी' ने फ्रांस देश में प्राण त्याग किया। आप
स्वयं जा कर उन के मृतशरीर को इंग्लैंड में ले आये। ५ वीं
एप्रिल को उन की समाधिक्रिया हुई। १९०० ई० की ३१
जुलाई को मध्यम भ्राता "ड्युक ऑफ़ एडिनबरा" की
मृत्यु हुई। युवराज ने धीरता गुण से इस दुःख को सहन
किया।

१८७८ ई० की १४ वीं दिसम्बर को युवराज की बहन
'एलिस' की असमय मृत्यु हुई, इस से युवराज बहुत
दुःखित हुए। बड़े बहनोई जर्मनसम्राट की मृत्यु पर युवराज
को जैसा दुःख हुआ था, उस से कहीं अधिक शोक छोटे
बहनोई "प्रिंस हेनरी ऑफ़ बैटेनवर्ग" के मरने से छोटी
बहन को विधवा देखकर हुआ। "युवराज हेनरी" १८९६
ई० की २० वीं जनवरी को "वाल्फ़ेड" नामक जहाज़ पर
स्वर्गगामी हो गये। इस दारुण शोकसमाचार को युवराज ने
सांड्रिंहम राजभवन में सुना। जिस जहाज़ पर मृतशरीर आ
रहा था, उस की प्रतीक्षा के लिये युवराज ट्रिनिटी बंदर में
गये और उस समय से लेकर समाधिक्रिया तक साथ रहे।

१८६२ ई० की १४ वीं जनवरी को प्रथम पुत्र “प्रिंस अलबर्ट विक्टर” की मृत्यु से युवराज अत्यन्त शोकसंतप्त हो गये। फिर युवराज की पत्नी के शोक का क्या कहा जाय— “सुनि विलाप दुख हूं दुख लागा। धीरज हूं कर धीरज भागा ॥” की दशा थी। यदि प्रिंस अधिक दिन बीमार रहते तो इतना अधिक दुःख नहीं होता, पर सो भी न हुआ। इनफ्लूएंजा और न्युमोनिया की बीमारी केवल चार दिन तक रही। इस दुर्घटना से संसार भर के मनुष्य दुःखी हो गये तो राजपरिवार का क्या कहना है। अनेक देशों से अनेक शोकप्रकाशक पत्रादि आये। युवराज ने अत्यन्त करुणा से सब का उत्तर दिया। पत्नी सहित युवराज शोक के कारण कुछ दिनों तक घर से बाहर नहीं हो सके। भारतवासियों ने उन का दर्शन किया था—इस से उन की मृत्यु पर इन लोगों ने अत्यन्त शोक प्रकाश किया।

थोड़े दिन पीछे दूसरे पुत्र के राज्याधिकारी होने के लिये अनेक प्रकार की व्यवस्था करनी पड़ी। उसी के कार्य में लगने से युवराज को वह शोक भूलने लगा। उसी समय महारानी विक्टोरिया ने “प्रिंस जार्ज” को “डिउक ऑफ़ यार्क”, “अर्ल ऑफ़ इनवरनेस” और “वैरन किला-

रने " की उपाधि दीं। उसी समय युवराज ने उन को पहले पहल लार्डसभा में बैठाया।

भारत भ्रमण * ।

युवराज १८७५ ई० की १० वीं अक्टूबर को भारत-भ्रमण के लिये सुसज्जित 'सेरापिस' नाम जहाज पर सवार हुए। आप का आदर करने के लिये भारतवर्ष के क्या धनी क्या निर्धन किसी ने धन व्यय करने में त्रुटि नहीं की। आने के बहुत दिन पहले से आप के सत्कार के लिये प्रबन्ध होता था। प्रजा के उत्साह की सीमा न थी। प्रायः छः सात महीने तक भारतवर्ष के नर नारियों में युवराज के शुभागमन की चर्चा के सिवा दूसरी बात नहीं सुनी जाती थी। राज-भक्ति भारतवर्ष का एक धर्म है, इस लिये भारतवासियों ने भावी राजा की भक्ति दिखाने में कुछ भी त्रुटि नहीं की।

* अनेक ग्रन्थों के रचयिता विद्याविनोद सम्पादक बाबू चण्डीप्रसाद सिंह ने "युवराज की यात्रा" नामक पुस्तक में इस यात्रा का पूरा वर्णन किया है।